RAJYA SABHA

Thursday, the 16th *August,* 1984|25 *Sravana,* 1906 *(Saka)*

The House met at eleven of the clock, Mr. Chairman in the Chair.

REFERENCE TO THE REPORTED DEFECTIONS IN ANDHRA PRADESH

SHR[SURESH KALMADI (Maharashtra): I have given the notice for taking up the Andhra Pradesh issue. Massiv* defections caused by Congvess(I) in Andhra Pradesh. .. *(.Inierruptions).* What happened to my notice? I have given a notice. What is the fate of the notice? There *is* mass- defection. Say, yes or no. *(Interrwptions)*

SHR' B. SATYANARAYAN REDDY (Andhra Pradesh); C'nief Minister, Andhra Pradesh, has requested the Governor to convene tlie Assembly on 18th. The Governor must call the Assembly on the lrlth. (Interruptions).

SHRI SURESH KALMADI: We want your presence at 12.00 O'clock.

MR. CHAIRMAN: We *will* see. Question No. 341.

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

Statutory status to tlie Minorities Commission

*341. SHRI SYED AHMAD HASHML-
SHRI RAOOF VALIULLAH:

V/ill the Minister of HOME AFFAIRS be pleased to state:

(a) whether there is any proposal under Government's consideration to grant statutory status to the Minorities Commission; and

tThe question was actually asked on the floor of the House by Shri Syed Ahmad Hashmi.

1037 RS—1.

(b) if so, by when action is likely to be taken in this regard?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (SHRIMATI RAM DULARI SINHA): (a) and (b) The various aspect's anti implications of the proposal are under consideration of the Govern* ment.

श्री सैयद अहमद हाशमी: मुझे हैरत है कि आज 6 साल के बाद भी गवर्नमेन्ट इस पोजिशन में नहीं है कि पूरे तरीके से एश्योरेंस दें या कमिटमेन्ट करें। मुझे नहीं मालूम कि अगर माइनोरिटी कमीशन का मकसद यह है कि कुछ पस्मांदा रिटायर्ड लोगों को एकोमोडेट करना है तो बात दूसरी है। वरना जब तक इसे स्टेट्यूटरी पावर न हो या उसकी रिकमेंडेशन पार्लियामेन्ट के अन्दर [illegible] न हों कम से कम, गुजिश्ता साल, 83 के अंदर माइनोरिटी कमीशन ने अपनी रिकमेंडेशन दी, रिपोर्ट दी लेकिन एक साल पूरा गुजरने के बाद यानी 84 के अन्दर लोक सभा के अन्दर पेश हुई और राज्य सभा के अन्दर नहीं आई। आप गौर करें कि बहुत से ऐसे मसाइल हैं जिनके अन्दर अन्दाजा यह होता है कि माइनोरिटी कमीशन का कोई इस्तेमाल ही नहीं है। यहां तक कि इसके बसाओकात जो [illegible] किरदार रहा, वह इस्तेमाल में नहीं रहा मीनू मसानी जी जो इसके पहले चेयरमैन थे, महज इसलिए उनको इस्तीफा देना पड़ा कि म्यूनिसिपलिटी एक्ट के बारे में उनका इस्तेमाल नहीं रह गया था। एक तरफ तो यह सूरतेहाल है और दूसरी तरफ सूरते हाल यह है कि वह माइनोरिटी कमीशन जो कि माइनोरिटी के प्रोटेक्शन, उनकी डिमान्ड उनके मुतालबात के ऊपर गौर करने तथा जायज तौर पर माइनोरिटी के जजबात की नुमाइन्दगी के लिए मुकर्रर किया गया था, ताकी हमेशा उन मसाइल पर संजीदगी से गौर करें, मैं समझता हूं उसका इस्तेमाल अब सही नहीं रहा। इसलिए माइनोरिटी कमीशन के चेयरमैन जब ऐसे कंट्रोवर्शियल मामले के अन्दर जो मुसलमानों के मजहबी दीनी इजदवाजी मसाइल [illegible] के अन्दर अपनी राय देने लगे... (व्यवधान) मैं बता रहा हूं माइनोरिटी कमीशन का मकसद क्या है।

श्री सभापति: सवाल पूछिए । **(व्यवधान)**

श्री सैयद अहमद हाशमी: इनके कहे बिना सवाल पूछ ही नहीं सकता । बसा औकात और पालिटिकल आबरवेशन में सियासी मामलों के अन्दर हमारे माइनॉरिटी कमीशन ने राय देनी शुरू की और सूरते हाल यह भी है कि पंजाब में इतना बड़ा हादसा हो जाने के बाद भी माइनॉरिटी कमीशन वहां पर नहीं पहुंचा और न उसके बारे में कोई राय दी । आज दी होल सूरतेहाल यह है कि जब तक स्टेचुअरी पावर उसको नहीं मिलती उसकी रिकमेंडेशन या उसकी सिफारिशात पार्लियामेंट के अन्दर डिबेट में नहीं आती तब तक उसका मकसद बेकार है । जो मैंने सूरतेहाल बयान की मैं समझता हूं यह इस दर्जे पर पहुंच गया है कि मुल्क के अन्दर यह महसूस होने लगा कि माइनॉरिटी एक मजाक है और उसके फायदे का कोई सवाल नहीं है । ठीक उसी तरीके से जैसे मुल्क के अन्दर दूसरे कमीशन बने और आज तक उनका कोई इस्तेमाल नहीं हुआ ।

श्री सभापति : सवाल क्या किया आपने?

श्री सैयद अहमद हाशमी : सवाल यह किया कि इसका मकसद क्या है । इस सूरते हाल के अंदर जब कि इसका कोई इस्तेमाल नहीं है । इस माइनॉरिटी कमीशन का बाकायदा बाकी रहने का क्या मकसद है। जबकि इस पोजीशन में गवर्नमेंट नहीं है कि कोई कमिट करे । माइनॉरिटी आसपेक्ट्स पर 6 साल से गौर हो रहा है लेकिन आज कोई कमिटमेंट नहीं कर सकते इसका क्या मकसद है । जो शुरु में कमिटमेन्ट था कि स्टेट्यूटरी पावर दी जायगी, इसका कानूनी रिकोगनिशन होगा तो क्या इस सिच्युएशन में गवर्नमेन्ट है कि इस कमिटमेंट को पूरा करे ?

†[شری سید احمد ہاشمی : مجھے حیرت ہے کہ آج چھ سال کے بعد بھی گورنمنٹ اس پوزیشن میں نہیں ہے کہ پورے طریقے سے ایشورنس دے یا کمٹمنٹ کرے - مجھے معلوم نہیں کہ اگر مائناریٹی کمیشن کا مقصد یہ ہے کہ کچھ پسماندہ ریٹائرڈ لوگوں کو اکوموڈیٹ کرنا ہے تو بات دوسری ہے - ورنہ جب تک اسے سٹیٹوچری پاور نہ ہو یا اس کی رکمنڈیشن پارلیمنٹ کے اندر زیر بحث نہ ہو - کم سے کم گزشتہ سال ۸۳ کے اندر مائناریٹی کمیشن نے اپنی رکمنڈیشن دی - رپورٹ دی - لیکن ایک سال پورا گزرنے کے بعد یعنی ۸۴ کے اندر لوک سبھا کے اندر پیش ہوئی اور راجیہ سبھا کے اندر نہیں آئی - آپ غور کریں کہ بہت سے ایسے مسائل ہیں جسکے اندر یہ اندازہ ہوتا ہے کہ مائناریٹی کمیشن کا کوئی استعمال نہیں ہے یہاں تک کہ اسکے بسا اوقات کا جو اب تک کا کردار رہا وہ استعمال میں نہیں رہا - میٹو مسانی جی جو اسکے پہلے چیئرمین تھے محض اس لئے ان کو استعفی دینا پڑا کہ مونسپلٹی ایکٹ کے بارے میں اسکا استعمال نہیں رہ گیا تھا - ایک طرف تو یہ صورتحال ہے دوسری طرف صورتحال یہ ہے کہ وہ مائناریٹی کمیشن جو کہ مائناریٹی کے پروٹیکشن ان کی ڈیمانڈ - انکے مطالبات کے اوپر غور کرے اور جائز طور پر مائناریٹیز جذبات کی نمائندگی کیلئے مقرر کیا گیا تھا تاکہ ہمیشہ ان مسائل پر سنجیدگی سے غور کرے - میں سمجھتا ہوں اس کا استعمال اب صحیح نہیں رہا - اس لئے مائناریٹی کمیشن

†[ ] Transliteration in Arabic script.

کے جھگڑوں میں جب ایسے کنٹرو ورشیل معاملے کے اندر جو مسلمانوں کے مذہبی - دینی - جذباتی - پرسنل لا کے اندر اپنی رائے دینے لگے......

(مداخلت)...... میں بتا رہا ہوں مائناریٹیز کمیشن کا مقصد کیا ہے -

†[شری سبھا پتی : سوال پوچھئے ......(مداخلت)......]

†[شری سید احمد ہاشمی : ان کے کہنے بنا سوال پوچھ ہی نہیں سکتا - بسا اوقات اور پالیٹیکل آور ٹون میں سیاسی معاملوں کے اندر ہمارے مائناریٹی کمیشن نے رائے دینی شروع کی - اور صورتحال یہ ہوی ہے کہ پنجاب میں اتنا بڑا حادثہ ہوجانے کے بعد بھی مائناریٹی کمیشن وہاں پر نہیں پہنچا اور نہ اسکے بارے میں کوئی رائے دی دہ اون دہ ہول ؟؟ صورتحال یہ ہے کہ جب تک اسے اسٹیٹو چری پاور ان کو نہیں ملتی اسکی رکمنڈیشن یا اسکی سفارشات پارلیمنٹ کے اندر ڈبیٹ میں نہیں آتی تب تک اسکا مقصد بیکار ہے - جو میں نے صورتحال بیان کی میں سمجھتا ہوں یہ اس درجہ پر پہنچ گیا ہے کہ ملک کے اندر یہ محسوس ہونے لگا کہ مائناریٹی ایک مذاق ہے اور اس کے فائدے کا کوئی سوال نہیں ہے - ٹھیک اسی طریقہ سے جیسے ملک کے اندر دوسرے کمیشن بنے اور آج تک ان کا کوئی استعمال نہیں ہوا -]

†[شری سبھا پتی : سوال کیا کیا آپ نے ?]

†[شری سید احمد ہاشمی : سوال یہ کیا کہ اسکا مقصد کیا ہے - اس صورتحال کے اندر جب کہ اسکا کوئی استعمال نہیں ہے - اس مہان مائناریٹی کمیشن کا باقاعدہ باقی رہنے کا کیا مقصد ہے - جب کہ اس پوزیشن میں گورنمنٹ نہیں ہے کہ کوئی کمٹ کرے - مائناریٹی آبجیکٹس پر چھ سال سے غور ہو رہا ہے لیکن آج کوئی کمٹمینٹ نہیں کر سکتے اس کا کیا مقصد ہے - جو شروع میں کمٹمینٹ تھا اسٹیٹوچری پاور دی جائیگی اسکا قانونی ریکگنیشن ہوگا تو کیا اس سچوایشن میں گورنمنٹ ہے کہ اس کمٹمینٹ کو پورا کرے -]

SHRIMATI RAM DULARI SINHA: The Minorities Commission was set up by the Janata Government in **1978** under executive order and since then the same arrangements are continuing. As I have stated just now, the question regarding giving statutory or constitutional status to the Commission is, however, under the consideration of the Government.

†[ ] Transliteration in Arabic script.

†[ ] Transliteration in Arabic script.

श्री सैयद अहमद हाशमी : यह तो वही बात है कि जिस पर मैंने दतराज किया था । **कोई कमिटमेंट नहीं है । आज 6 साल से** यही हो रहा है कि इस पर गौर किया जायगा, **लेकिन कोई कमिटमेंट नहीं है । मेरा सीधा** सवाल यह है कि 6 साल का पूरा करेक्टर जो माइनारिटीज कमीशन का गुजरा है क्या उस के बाद भी हुकूमत की यह राय है कि उस का कोई फायदा है और अकल्लियतों के हुकूकों की हिफाजत या उन के जायज मतालबात की नुमाइंदगी के लिये कोई हक रखता है या कोई जबाब रखता है । इस के साथ ही एक सवाल मैं और पूछना चाहता हूं कि माइनारिटीज कमीशन का जो पहले कंसेशन था उस के चेयरमैन को ही उस से एख्तिलाफ है और वह कहते हैं कि ह्यूमन राइट्स कमीशन बनना चाहिए । इसके बारे में हुकूमत का कोई मतालबा है?

†[شری سید احمد هاشمی : یہ تو وهی بات هے که جس پر میں نے اعتراض کیا تها - کوئی کمیٹمینٹ نہیں هے - آج چهے سال سے یہی هو رها هے که سوچ غور کیا جائیگا لیکن کوئی کمٹمینٹ نہیں هے - میرا سیدها سوال یہ هے که چهے سال کا پورا کریکٹر جو مائناریٹیز کمیشن کا گزرا هے کیا اسکے بعد بهی حکومت کی یہ رائے هے که اسکا کوئی فائدہ هے اور اقلیتوں کے حقوقوں کی حفاظت یا انکے جائز مطالبات کی نمائندگی کیلئے وہ کوئی حق رکهتا هے یا کوئی جواب رکهتا هے - اسکے ساتهہ هی میں ایک سوال اور پوچهنا چاهتا هوں که مائناریٹیز کمیشن کا جو پہلے کنسیپشن تها اسکے چیئرمین کو هی اس سے اختلاف هے اور وہ کہتے هیں که هیومن رائٹس کمیشن بنانا چاهئے - اسکے بارے میں حکومت کا کوئی مطالبہ هے -]

श्री पी. वी. नरसिंह राव :इतनी लम्बी चौड़ी तारीख सुनाने का कोई फायदा नहीं, लेकिन इस बारे में एक बार यहां बिल आया था और वह पास नहीं हो पाया। इस का मतलब है कि पार्लियामेंट में भी इस के मुआफिक राय नहीं थी । अब देखना है कि क्या हो सकता है और इस बीच में हम ने इस कमीशन को काफी स्टाफ दे कर उन से काम कराने की कोशिश की है और कर रहे हैं । यह सब चल रहा है ।

श्री सैयद अहमद हाशमी : क्या इस सिचुयेशन में जो पूरे 6 साल का इस का करेक्टर है, माइनारिटीज कमीशन का, यह सही है कि उस का कोई फंक्शन नहीं था । इस पिछले 6 साल के अंदर उस का कोई काम नहीं था ।

†[شری سید احمد هاشمی : کیا اس سچوایشن میں جو پورے چهے سال کا اسکا کریکٹر هے - مائناریٹیز کمیشن کا یہ صحیح هے که اسکا کوئی فنکشن نہیں تها - ان پچهلے چهے سال کے اندر اسکا کوئی کام نہیں تها -]

श्री सभापति : जवाब तो कायम है कि वह गौर कर रह हैं ।

श्री सैयद अहमद हाशमी : बिलकुल बहलावा है । कोई फायदा नहीं इससे । बेहतर हो कि हुकूमत कह दे कि हम इसको खत्म कर रहे हैं । क्या वाकई माइनारिटीज कमीशन के फंक्शन से हुकूमत मुतमइन है ? इस के अन्दर यह सवाल है । इस का जवाब नहीं दिया गया ।

†[ ] Transliteration in Arabic script.

†[شری سید احمد هاشمی : بالکل بھلوا ھے - کوئی فائدہ نہیں اس سے - بہتر ہو کہ حکومت کہدے کہ ہم اسکو ختم کر رہے ہیں - کیا واقعی مائناریٹیز کمیشن کے فنکشن سے حکومت مطمئن ہے - اسکے اندر یہ سوال ہے - اسکا جواب نہیں دیا گیا -]

श्री सभापति : जवाब दे दिया गया है ।

श्री सैयद अहमद हाशमी : बिल्कुल गैर जरूरी जवाब है । क्या माइनोरिटीज कमीशन के फंक्शन से जो पिछले 6 साल से उसके रहे है । यह हुकूमत मुतमईन है ? अगर आप मुतमईन है तो उसे बाकी रहना चाहिए नहीं तो उसका कोई सवाल नहीं, उसके रहने का कोई फायदा नहीं ।

†[شری سید احمد هاشمی : بالکل فور ضروری جواب ہے - کیا مائناریٹیز کمیشن کے فنکشن سے جو پچھلے چھ سال میں اسکے رہے ہیں یہ حکومت مطمئن ہے اگر آپ مطمئن ہیں تو اسے بالی رہنا چاہئے نہیں تو اسکا کوئی سوال نہیں - اسکے رہنے کا کوئی فائدہ نہیں -]

श्री सभापति : क्या आप अपने जवाब से मुतमईन हैं ?

श्री पी० वी० नरसिंह राव : मैं अपने जवाब से जरूर मुतमईन हूं ।

SHRI RAOOF VALIQLLAH: Pending the conferment of constitutional status on the Minorities Commission, will the Government accept the recommendation of the Commission to confer upon it powers of investigation contained in section 5 of the Commission of Inquiry Act by an appropriate notification under section 3 of the Act?

SHRIMATI RAM DULARI SINHA: The Commission has recommended—I can elaborate some of the main recommendations-^ 1) better organisational system for the Commission; (2) constitutional or statutory status for the Commission; (3) powers of investigation under the Commmission cf Inquiry Act, 1952 for the Commission; and (4) setting up a comprehensive National Integration-cum-Human Rights Commission.

As regards setting up a National Integration-cum-Human Rights Commission, the proposal itself is not very clearly spelt out and even the •Commission itself in its report has said that the matter requires fuller study to frame an elaborate stheme to carry out the objectives involved, in this recommendation.:

श्री असद मदनी : पिछले सेशन में होम मिनिस्टर साहब ने यकीनदहानी की थी कि जो कई माइनारिटीज कमीशन बने हैं उन की रिपोर्टस आने में समय लगेगा लेकिन खासकर गोपाल सिंह साहब की सदारत में जो कमीशन बना था उसने की रिपोर्ट अभी तक हम लोगों के सामने नहीं आयी है। उस यकीनदहानी को पूरा करने की गरज से वह रिपोर्ट हाउस के सामने आना चाहिए ।

†[شری اسعد مدنی : پچھلے سیشن میں ہوم منسٹر صاحب نے یقین دہانی کی تھی کہ جو کئی مائناریٹیز کمیشن بنے ہیں ان کی رپورٹ آنے میں وقت لگے گا - لیکن خاص کر

گوپال سنگھ صاحب کی صدارت میں جو کمیشن بنا تھا اس کی رپورٹ ابھی تک ہم لوگوں کے سامنے نہیں آئی ہے - اس یقین دھانی کو پورا کرنے کی غرض سے وہ رپورٹ هاؤس کے سامنے آنی چاهئے -]

SHRI P. V. NARASIMHA RAO: Sir, I shall find out. I am not aware of it. But I shall take note of the suggestion. I have no objection to any debate as such. We are prepared for it.

श्री गुलाम रसूल कार : मैं आनरेबल होम मिनिस्टर साहब से यह दरयाफ्त करना चाहता हूं कि क्या यह वाकया है कि प्राइम मिनिस्टर साहिबा की तरफ से एक 15 नुकाती सर्कुलर निकाला था, तमाम स्टेट गवर्नमेंट को हिदायतें दी थीं कि माइनरिटीज के साथ क्या क्या करना चाहिए। वह सर्कुलर क्या था, उस पर आज तक स्टेट गवर्नमेंट में क्या अमल दरामद किया है ?

श्री पी० वी० नरसिम्हा राव : किस सर्कुलर के बारे में कह रहे हैं ?

श्री गलाम रसूल कार : प्राइम मिनिस्टर साहिबा की तरफ से एक सर्कुलर निकाला गया था तमाम स्टेट, मिनिस्टरर्स के नाम पर जिसमें माइनारिटीज के बारे में कहा गया था कि। वह सर्कुलर क्या था, उसमें स्टेट गवर्नमेंट और मरकजीज सरकार ने आज तक क्या किया ? नम्बर दो, क्या होम मिनिस्ट्री में माइनारिटीज सैल कायम है, यदि हां, तो उसमें आज तक क्या क्या काम हुआ है क्या क्या रिकमेंडेशंस की गई हैं मानारिटीज के बारे में और वे क्या क्या करना चाहते हैं ? तीसरी बात यह कि क्या लिंग्विस्टिक कमिशनर की जगह जो कि 1977 में खाली हो चुकी थीं, आज तक पूरी की गई है ? यदि नहीं तो क्यों पूरी की गई ?

SHRIMATI RAM DULARI SINHA: As regards the Prime Minister's guildelines are concerned, the Prime Minister has formulated a 15-point programme for the........ (Interruption) We are in constant touch with the State governments and Union territory administrating and here we are having one monitering cell. That is headed by an Additional Secretary and is charged with the responsibility of monitoring the progress of implementation of the 15-point programme directed by the Prime Minister. We get quarterly reports from the States and Union territories, and the cell reports to the Prime Minister about the progress of implementation.

श्रीमति मैमूना सुल्तान : चैयरमैन साहब यह सवाल जो माइनारिटीज कमीशन के बारे में हो रहा है, यह बहुत ही जरूरी सवाल है। इसके लिए हमारे आनरेबुल मेम्बर ने जो सवाल किया वह सवाल तो अच्छा है, लेकिन जिस ढंग से पूछा है उसके लिए तो मैं कुछ और नहीं कह सकती सिवाय इसके कि जनता पार्टी ने यह कमीशन इस्टेबलिश किया था और पोलिटिकल मोटिलव से किया था।

श्री सैयद अहमद हाशमी : पोलिटिकल मोटिव क्या था ? . . (**व्यवधान**)

श्रीमति मैमूना सुल्तान : हाशमी साहब ने मुझे टोक दिया, मैं आपसे कुछ नहीं कह रही हूं। अब मुझे कहना पड़ता है कि——

"अंधेरे में भटकते ही उजाले के लिए
मैंने पहले ही कहा था जला लो मुझको ।"

1978 में जनता गवर्नमेंट ने यह माइनोरिटीज कमीशन बनाया । बाद में उसका मकसद पूरा नहीं हुआ क्योंकि उसके बाद ही अलीगढ़ के फसादात हुए । वहां माइनोरिटीज कमीशन के जो मैम्बर्स थे उनको जाने नहीं दिया गया । स्टेच्युटरी पावर्स भी जो हैं जिनके लिए उनकी यकीन दिलाया गया था कि हम देंगे, लेकिन उन्होंने नहीं दिए क्योंकि जिस दिन यह बिल हाउस में आया था उस दिन रूलिंग पार्टी के मैम्बर मौजूद नहीं थे । वह बात भी हमको याद रखनी है । मैं आपसे सवाल ही करूंगी क्योंकि आप इजाजत नहीं देंगे ज्यादा बोलने की । सवाल यह था कि इनकी जो टर्म्स आफ रेफरैंस हैं वह बहुत ज्यादा बड़ी हैं । इसमें अगर आप रिलीजस ट्रस्ट भी आयेंगे तो उसमें जो ग्रुप्स हैं उनके आपस में डिफरेंसज हो जाते हैं जैसे अडाप्सन बिल है, फलां है, फलां है । तो क्या आप इस बात पर गौर करेंगे इसको लिमिट करेंगे कुछ चीजों पर, जैसे मुसलमानों की ऐजुकेशन है ; उनकी सोशियो-इकानामिक प्राबलम, हैं, फसादात के पीछे क्या सोशियो इकानामिक कंडीशंस रहती है । दूसरे बेग साहब ने यह भी रिकमंडेशन की है कि लोयल ऐक्सपर्टस की एक कमेटी बनाई जाए जो तमाम चीजों पर गौर करे कि किस तरह से इसको इफैक्टिव बनाया जाए ? क्या वह आपने बनाया है, आप इस पर गौर करेंगे ? ये मेरे सवाल हैं ।

श्री पी० वी० नरसिम्हा राव : सदर साहब, टर्म्स आफ रेफरेंन्स को कम करना आसान नहीं होता । मांग तो होती है उसकी और वसीह कीजिए । लेकिन आनरेबल मैम्बर ने जो सुझाव दिया है उस पर हम गौर करेंगे और ज्यादा प्वाइंटेड बनाने के लिए और कमीशन के काम को ज्यादा कारगर बनाने के लिए कोई तजवीज की जा सकती है तो हम गौर करेंगे ।

लेकिन मेरा पहला रिएक्शन यही है कि जहां कहीं टर्म्स आफ रेफरेंस को कम करने की तजवीज होती है, प्रोपोजल होता है तो वह अवाम में काबिले कबूल नहीं होता है बल्कि उसे वसीयत बनाने की मांग हमेशा हुआ करती है । दूसरा जो सवाल उठाया गया है उस पर जरूर गौर करेंगे ।

श्री गुलाम रसूल कार : जनाब, मेरे दो सवालों का जवाब नहीं आया है । लिंग्विस्टिक कमिश्नर की जगह छः सालों से खाली पड़ी हुई है, उसको भरा नहीं गया है, यह सवाल मैंने पूछा था और दूसरा सवाल यह पूछा था कि क्या होम मिनिस्ट्री में कोई माइनोरिटीज सैल बना हुआ है ? अगर बना हुआ है तो उसने क्या रिकमेन्डेशन्स दी हैं और उस पर क्या अमल किया गया है ?

†[شری غلام رسول کار : جناب میرے دو سوالوں کا جواب نہیں آیا ہے - لنگوسٹک کمشنر کی جگہ چھے سالوں سے خالی پڑی ہوئی ہے اسکو بھرا نہیں گیا ہے یہ سوال میں نے پوچھا تھا - اور دوسرا سوال یہ پوچھا تھا کہ کیا ہوم منسٹری میں کوئی مائنارٹیز سیل بنا ہوا ہے - اگر بنا ہوا ہے تو اس نے کیا رکمنڈیشن دی ہیں اور اس پر کیا عمل کیا گیا ہے -]

†[ ] Transliteration in Arabic script.

श्री पी० वी० नरसिंह राव : देखिये, कई रिकमेंडेशन्स आती हैं, यहां खड़े-खड़े कितनी चीजें मैं बता सकता हूं ? आप मुझे बताइये कि आप क्या क्या तफसील चाहते हैं। मैं सारी तफसील देने के लिए तैयार हूं। सवालों के जवाब देने के सिलसिले में इतनी लम्बी पूरी डिटेल का देना मुमकिन नहीं है।

MR. CHAIRMAN: Going round and round the mulberry bush.

342. *.[The questioner {Shri Satya Prakash Malaviya) was absent. For answer* vide col. 43-44 *infra]*

*343. *[The questioner (Shri Chimbalbhai Mehta) was absent. For answer* vide col. 45 *infra.]*

*344. *[The questioner (Shri Pyare-lal Khandelwal) was absent. For answer* vide *col.* 45-46 *infra.]*

Economy-Model Colour T.V. Sets

34S. SHRl SURESH KALMADI:
SHRI S. W. DHABE:

Will the PRIME MINISTER be pleased to state:

(a) whether it is a fact that the economy model colour. TV sets priced at about Rs. 5000|- is yet to arrive in the market, in spite of ad-vance booking done six months back;

(b) whether it is a fact that the three public sector undertakings in the field have failed to produce and deliver sets at these prices;

(c) whether it is also a fact that whereas the Electronics Corporation of India Limited (ECIL) has yet to deliver a single set, the UPTRON which had introduced the economy model colour TV sets in Delhi and UP regions had to withdraw those sets on account of technical defects and whether the supply by the K>1-tron is erratic;

(d) if so, what are the reasons therefor; and

(e) whether it is a fact that the major cause of the delay is the non-availability of colour picture tubes by ETTDC, and if so, what action is being taken to provide picture tubes early and in sufficient quantities?

*The question was actually asked <sn the floor of the House by Shri Suresh Kalmadi.

THE DEPUTY MINISTER IN THE DEPARTMENT OF ELECTRONICS AND IN THE MINISTRY OF FOOD AND CIVIL .SUPPLIES (SHRI M. S. SANJEEVI RAO): (a) to (e) A Statement is laid on the Table of the House.

Statement

(a) to (e) All the three public sector companies in the field have commenced regular production from March 1984. Till the end of July 1984, ECIL has supplied 3700 sets; UPTRON 6236 sets and KELTRON produced 1906 sets. Based on the re-duction in customs and excise form-ing part of the 'Measures to further accelerate the development of the electronics industry' announced by Government in August 1983, Gov-ernment have felt that CTV sets of 51 cm. size should be available for around Rs. 5,000 plus local taxes. Above referred sets are being mar-keted at the following prices, which include 3 months' warranty:

	Rs.
CIL	5150 + local taxes (spectra)
	5650 + local taxes (spectra-super)
UPTRON . .	5106 + local taxes
KELTRON . .	5405 + local taxes

It is therefore not a fact that the 3 public sector undertakings have failed to produce and deliver sets around the anticipated price.